समग्र मूल्यांकन

साठोत्तरी काल से नारी सिर्फ घर की चार दीवारी में कैद न रहकर सभी क्षेत्रों में प्रगति के नए-नए क्षितिज पार कर रही है। साठोत्तरी काल तक पुरुष लेखकों ने अपने साहित्य के द्वारा नारी वेदना तथा समस्याओं को चित्रित किया था। पर साठोत्तरी युग की महिला कथाकारों ने खुद भोगे हुए और अनुभूत यथार्थ की प्रामाणिक अभिव्यक्ति को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। इन्हीं साठोत्तरी हिंदी कथाकारों में जो अनेक नाम प्रतिष्ठित हुए है उनमें एक नाम मराठी भाषी मालती जोशी का भी है। मालती जोशी अपनी पारिवारिक एवं नारी चेतना के संपूर्ण सामर्थ्य के साथ हिंदी कहानियों में अवतरित हुई है। इनका संपूर्ण जीवन मध्यमवर्गीय परिवार में बितने के कारण मालती जोशी मध्यमवर्गीय शहरी पारिवारिक परिवेश से जुड़ी हुई कथाकार है। मालती जोशी ने लेखन की प्रेरणा अपने पिताजी से ली है। इन्होंने अपने लेखन की शुरुआत विद्यार्थी अवस्था में गीत लिखने से की पर यह शौक उनके विद्यार्थी जीवन तक ही सीमित रहा। फिर इन्होने बच्चों के लिए कहानियां लिखना शुरू किया जो पुरस्कारों से भी सम्मानित हुई हैं।

मालती जोशी की पहली कहानी 'धर्मयुग' पत्रिका में प्रकाशित हुई इसके बाद कहानी लिखने का जो दौर चला वह आज तक जारी है। इन्होने गीत, एकांकी, रेखाचित्र, निबंध, उपन्यास, रेडियो एवं दूरदर्शन-आलेख आदि विधाओं में लेखन किया है। पर इन्हें विशेष सफलता कहानी-साहित्य में ही मिली है।

मालती जोशी ने अपनी कहानियों में वहीं लिखा जो उन्होने अपने परिवार में या अपने आस पास घटित घनाओं में अनुभव किया। मालती जोशी को अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। इनकी कहानियों का मुख्य विषय 'परिवार' ही रहा है।

आज कल समाज में परंपरागत मूल्यों का विघटन संबंधों की ईकाइयों में बड़ी तेजी से हुआ है। उसमें परिवार का स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के मानसिक शारीरिक एवं आर्थिक संबंध परस्पर जुड़े हुए पाए जाते हैं। 'परिवार' एक केंद्र बिंदु के रूप में दिखाई देता है। जहां खड़े होकर व्यक्ति और समाज के संबंधों को नापा जा सकता है। व्यक्ति और समाज को जोड़ने वाले पुल के भीतर अब कई दरारें पड़ने लगी हैं। इन दरारों के कारण भी कई दिखाई देते हैं। मालती जोशी की सभी कहानियां पारिवारिक परिवेश-प्रधान कहानियों की कोटी में आती है। इनकी संवेदना वर्तमान पारिवारिक व्यवस्था के प्रति बहुत अधिक और कहीं गहरे जुड़ी हुई है।

इनकी कहानियों का कथ्य परिवार के दायरे में ही सिमटा हुआ पाया जाता है। कथ्य कहानी के मूल उपकरण के रूप में पाया जाता है। कहानी की रचनाओं में उसके सभी तत्व महत्त्वपूर्ण होते हैं पर कथ्य एक ऐसा

तत्व है जिसके अभाव में कहानी की संभावना ही नहीं हो सकती। जिस प्रकार शरीर में ढांचे की अवश्यकता होती है उसी प्रकार कहानी में कथ्य का महत्त्व ढांचे के रूप में होता है। मालती जोशी की कहानियों के कथ्य को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि उनकी कहानियों के कथ्य में मध्यमवर्गीय परिवार की समस्याओं का चित्रण दिखाई देता है। जिसमें परिवार में घटित छोटी-छोटी बातों को उन्होंने अपनी कहानियों का विषय बनाया है। जिसमें उनकी आखरी शर्त, संवेदना, साथी, खेल खेल में, परायी बेटी का दर्द, पूजा के फूल, विदा, नए बंधन, छीना हुआ सुख आदि कहानियों का समावेश होता है। बड़े होने के बाद बेटे अपने मां-बाप की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं होते। जिन्होंने उन्हें इतना पढ़ाया-लिखाया अच्छी जगह नौकरी पर लगाया वही मां-बाप बेटों को बोझ लगने लगते हैं। अपनी अमीर पत्नी के द्वारा उनका अपमान होते हुए देखकर भी उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता।

मालती जोशी ने 'अंतिम संक्षेप' कहानी संग्रह की आठ कहानियों में से पांच कहानियों में बूढ़े लोगों की पीड़ा को चित्रित किया है। जिन में अंतिम संक्षेप, क्षरण, मान-अपमान, अपने-अपने दायरे, सन्नाटा ही सन्नाटा इन कहानियों का समावेश होता है।

मालती जोशी ने अपनी कहानियों में पारिवारिक चित्रण के साथ नारी चित्रण मुख्य रूप से किया है। इन्होंने नारी के पत्नी, प्रेयसी, मां, बेटी, बड़ी दीदी इन रिश्तों का अधिक चित्रण किया है। इनकी कहानियों में परिवार में पिता की मृत्यु के बाद परिवार की जिम्मेदारी बड़ी बेटी पर आ जाती है। वह खुद नौकरी करके सारे परिवार की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है पर परिवारवालें उसकी शादी की चिंता बिल्कुल नहीं करते क्योंकि अगर वह शादी करके चली गई तो घरवालों का खर्चा कैसे चलेगा ? इसलिए नौकरी करनेवाली लड़की का सिर्फ दूध देनेवाली गाय के समान इस्तेमाल किया जाता है। मालती जोशी की 'आखिरी सौगात', 'अपराजिता' आदि कहानियों का इसमें समावेश होता है।

मालती जोशी ने एक ओर नारी के समझौतावादी, असहाय, अस्मिताशून्य, ग्रसित, रूढ़िवादी व्यक्तित्वहीन आदि रूपों को चित्रित किया है। तो दूसरी ओर विद्रोही, महत्त्वाकांक्षी, संघर्षशील, अस्मिता के प्रति सचेत आदि रूपों का भी चित्रण किया है।

मालती जोशी की कहानियों में विधवा नारी के रूप भी अधिक दिखाई देते हैं। विधवा के साथ परिवारवालें अच्छा व्यवहार नहीं करते यह परंपरा तो प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में दिखाई देती है। पर अब विधवा नारी का इस्तेमाल अलग तरीके से किया जाता है उसे अपने पति की जगह पर नौकरी लगाकर पैसे कमाने की मशीन के रूप में उसका इस्तेमाल किया जाता है। इसमें मुख्यतः 'कोउ न जाननहार', 'सती', 'मोरी रंग दी चुनरियां' इन कहानियों का समावेश होता है।

इस प्रकार ऊपर विवेचित विवेचन के अलावा मालती जोशी ने साठोत्तरी काल के अन्य पहलूओं पर भी न्यूनाधिक मात्रा में क्यों न हो अवश्य अपनी जागरुकता दिखाई है। इनमें आत्मीय संबंधों पर अर्थतंत्र का बढ़ता दबाव, पति-पत्नी के जीवन में आया बदलाव, नैतिक मूल्यों का विघटन, परंपरागत संबंधों की अस्वीकृति प्रतिष्ठा एवं योग्यता की अवमानना और अपनी शुभकामना कहानी के द्वारा मालती जोशी ने भ्रष्ट राजनीति का चित्रण किया है। इस प्रकार साठोत्तरी युगीन जीवन-यथार्थ के विभिन्न आयामों को उन्होने संक्षिप्त रूप में उभारा है।

'परिवार' समाज की आधारभूत एवं प्राथमिक ईकाइ है। अनेक परिवारों का समूह ही समाज होता है। अतः परिवार समाज और राष्ट्र की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। परिवार के अलावा इन दोनों का अस्तित्व असंभव है। मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियों एवं अवश्यकताओं ने इसे जन्म दिया है। भोजन, वस्त्र, निवास मनुष्य की प्राथमिक अवश्यकताएं हैं। जिनकी पूर्ति के कारण वह जीवित रहता है। इसके अतिरिक्त कामभाव उसकी एक ऐसी प्राकृतिक अवश्यकता है जो वह अकेले पूरी नहीं कर सकता, इसकी पूर्ति के लिए स्त्री और पुरुष को एक-दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। कामेच्छा की पूर्ति स्त्री-पुरुष मिलकर करते है, जिसकी परिणति संतानोत्पत्ति में हो जाती है। संतान की जीवन धारणा की चिंता से परिवार का जन्म हुआ है। परिवार के मूल में यौन संबंध ही होते हैं परंतु उन्मुक्त यौन संबंधों के लिए सभ्य समाज में स्थान नहीं होता। ऐसे संबंधों से उत्पन्न संतान का न कोई भविष्य होता है न संरक्षक। अतः इसके दुष्परिणामों को देखकर ही विवाह प्रथा का उदय हुआ होगा। किंतु परिवार तथा विवाह का प्रयोजन केवल कामेच्छा की पूर्ति या भौतिक अवश्यकताओं की पूर्ति न होकर संतानोत्पत्ति करके सृष्टिक्रम को बनाए रखना भी है। अतः मृत्यु और अमरत्व इन दो विरोधी अवस्थाओं का सुंदर समन्वय परिवार में होता है क्योंकि परिवार बच्चों को उत्पन्न करता है, जो मृत लोगों के रिक्त स्थान भर देते हैं। इस प्रकार समाज की अन्य संस्थाओं से परिवार मौलिक, सार्वभौमिक एवं सर्वोपरि है क्योंकि मनुष्य परिवार में जीवन प्राप्त करता है तथा भोजन, संरक्षण और पवित्र ज्ञान भी प्राप्त करता है।

'परिवार' शब्द संस्कृत के 'परि' उपसर्ग पूर्वक 'वृ' धातु में धत्र प्रत्येय के योग से बनता है। विभिन्न कोशकारों ने अपने विचारानुसार परिवार के अर्थ को स्पष्ट किया है। 'परिवार' की परिभाषा को भी अनेक विद्वानों ने स्पष्ट किया है। उनके मतानुसार 'परिवार वह समूह है जो कि विवाह, रक्त संबंध अथवा गोद लेने आदि से बंधा हुआ है। इसमें एक घर बनाकर पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन अपनी अपनी सामाजिक पृष्ठभूमियों में रहते हुए एक-दूसरे को अंतः प्रभावित करते हैं तथा स्वयं भी इसी प्रकार प्रभावित होते हैं तथा संगठित होकर एक सांझे की संस्कृति का निर्माण करते हैं। तो किसी ने इसे यौन संबंधों द्वारा परिभाषित एक ऐसा सुनिश्चित और स्थायी समूह माना है जिसमें संतान का जन्म और पालन-पोषण होता है। ऐसा कहा है।

'परिवार का प्रयोजन' धर्म, अर्थ, काम तथा पुत्र प्राप्ति के हेतु महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

'परिवार के स्वरूप' में सदस्यों की संख्या के आधार पर परिवार के एकाकी परिवार, विवाह संबंधी परिवार, संयुक्त परिवार या विस्तृत परिवार, सम्मलित परिवार यह रूप दिखाई देते हैं। विवाह के आधार पर एक विवाह परिवार और बहुविवाह परिवार तो पारिवारिक सत्ता में मातृसत्ता और पितृसत्ता का समावेश होता है। भौगोलिक स्थिति में ग्रामीण परिवार, शहरी परिवार और आदिम परिवार इनका समावेश होता है। जातीय आधार में हिंदू परिवार, मुस्लिम परिवार और ईसाइ परिवार आते हैं। आर्थिक आधार में धनिक परिवार, मध्यमवर्गीय परिवार, और निम्नवर्गीय परिवार आते हैं।

विद्वानों द्वारा गिनाई हुई परिवार की विशेषताएं इस प्रकार हैं - सार्वभौमिकता, भावनात्मक प्रभाव, रचनात्मक प्रभाव, सीमित आकार, सामाजिक ढांचे में केंद्रीय स्थिति, सदस्यों का उत्तरदायित्व, सामाजिक नियंत्रण, स्थायी एवं अस्थायी प्रकृति, परिवार एक प्रक्रिया यह घटक आते हैं।

यौन इच्छाओं की पूर्ति, संतानोत्पत्ति, बच्चों का पालन-पोषण, भोजन, वस्त्र, निवास व्यवस्था, मनोवैज्ञानिक कार्य, आर्थिक कार्य, शैक्षिक कार्य, सामाजिक कार्य, राजनैतिक कार्य, रक्षात्मक कार्य, धार्मिक कार्य, सांस्कृतिक कार्य आदि की पूर्ति परिवार से होने के कारण मनुष्य समाज ने परिवार को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है।

मालती जोशी की कहानियों में चित्रित परिवार का स्वरूप इस प्रकार दिखाई देता है। इन्होंने अपनी कहानियों में 'सफल संयुक्त परिवार' का चित्रण कम मात्रा में चित्रित किया हुआ दिखाई देता है। सफल संयुक्त परिवार में (परायी बेटी का दर्द) लोग कैसे मिलजुलकर रहते हैं उन्हें एक-दूसरे की चिंता होती है ऐसे परिवार का चित्रण किया है। इन्होने 'असफल संयुक्त परिवार' का चित्रण करते हुए बहन की जिम्मेदारी (मोरी रंग दी चनुरियां) के कारण निर्मित पारिवारिक असंतोष, बेटे के द्वारा (साथी) परेशान मां-बाप, किसी एक सदस्य (अक्षम्य) की बीमारी के कारण, परिवार में नई भाई बहू (हमको दियो परदेस) के गलत बर्ताव के कारण, बेटे के घर में (क्षरण) अधिकार के अभाव के कारण, अर्थाभाव की (सन्नाटा ही सन्नाटा) कमी के कारण, बहू पर (ऊब) होनेवाले ससुरालवालों के अत्याचार के कारण संयुक्त परिवार असफल बनते हैं ऐसा मालती जोशी का मानना है। परिवार में सबसे महत्त्वपूर्ण 'दांपत्य जीवन' होता है। जो परिवार का मुख्य आधार होता है। मालती जोशी की कहानियों में सफल दांपत्य जीवन में सहचर्य को महत्त्वपूर्ण माना है। उनका निष्कर्ष है कि पति-पत्नी के पारस्परिक सहचर्य से परिवार का विकास होता है। पति-पत्नी एक-दूसरे के पूरक होने के कारण वे आपस में बातचीत करके अपनी समस्या को सुलझा लेते हैं। (संवेदना, छीना हुआ सुख, नए बंधन) दोनों के सफल जीवन के लिए परस्पर स्नेह तथा प्रेम का होना अनिवार्य है। सहचर्य के साथ इनमें सेवाभाव भी महत्त्वपूर्ण है।

सेवाभाव के कारण ही दांपत्य जीवन में सच्चा आनंद तथा सच्ची शांति होती है। इसके कारण दोनों (साथी) सुखमय जीवन यापन करते हैं।

मालती जोशी ने असफल दांपत्य जीवन के कारण माने हैं जिसमें पति-पत्नी में से किसी एक के (अंतिम संक्षेप) समझदारी के अभाव के कारण, अपने परिवार को (शुभकामना) सुखी रखने के गलत फैसले के कारण, विवाहपूर्व प्रेम के कारण (प्रश्नों के भंवर) पति-पत्नी में निर्मित तनाव, किसी एक की (अक्षम्य) बीमारी के कारण, वैचारिक भिन्नता (सन्नाटा) के कारण, पति या पत्नी द्वारा (बोल री कठपुतली) अपने अधिकारों का अगर गलत इस्तेमाल हो तो दांपत्य जीवन में असंतोष निर्माण होता है। तीसरे के (रिश्तें) प्रवेश के कारण पति-पत्नी में (ऊब) शारीरिक दूरी के कारण, शादी के पहले संजोए गए (आरंभ) सपनों के टूट जाने के कारण, आदि।

पारिवारिक जीवन में पति-पत्नी के अलावा अन्य संबंध भी महत्त्वपूर्ण दिखाई देते हैं। मालती जोशी ने दांपत्येत्तर संबंधों का चित्रण अपनी कहानियों में इस प्रकार से किया है।

'पिता-पुत्र' के संबंधों में स्नेह-अपनापन कम होने लगा है। अपना बूढ़ा पिता (अपने अपने दायरें) बेटे को बोझ के समान लगता है। बेटे के लिए बोझ बने मजबूर बाप का चित्रण मालती जोशी ने किया है।

'पिता-पुत्री' के संबंधों में (हमको दियो परदेस) अपनी बेटी की शादी के लिए चिंतित पिता और अपनी शादीशुदा (साजिश) बेटी की जिम्मेदारी न उठा पानेवालें मजबूर बाप का चित्रण मालती जोशी ने प्रभावी ढंग से किया है।

परिवार में 'मां-बेटे' का संबंध इस संसार में श्रेष्ठ माना जाता है। पर कुछ परिवारों में ऐसी स्थितियां निर्माण होती हैं जिससे मां-बेटे के संबंधों में दरारें निर्माण होती हैं। तो कुछ परिवारों में (कोख का दर्प) दोनों में अटूट स्नेह दिखाई देता है। तो कभी-कभी मां-बेटे के रिश्तें में तनाव दिखाई देता है। आज हर आत्मीय संबंधों के बीच एक नई अर्थवत्ता ने स्थान लिया है। जिसके परिणामस्वरूप विषमता की व्याप्ति बढ़ने लगी है। मां अपने बेटे के साथ प्यार से रहना चाहती है पर बेटे अपनी बुढ़ी मां को अपमानीत करने की कोशिश करते हैं। जब बेटा संस्कारों के विरोध में व्यवहार करने लगे (क्षरण, मान-अपमान, सन्नाटा ही सन्नाटा) तो मां-बेटे के बीच तनाव उत्पन्न होता हुआ दिखाई देता है।

'सौतेली मां-बेटा' संबंधों में प्राचीन काल से सौतेली मां अपने बेटे पर अन्याय करती हुई चित्रित की है। मालती जोशी ने अपनी कहानी में (आवारा बादल) सौतेली मां और बेटे के बीच गलतफहमी के कारण निर्मित तनाव को चित्रित किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि अगर सौतेले बेटे के मन में उद्‌धूत गलतफहमी दूर होती है तो सौतेली मां-बेटे के संबंध मधुर बन जाते हैं। इसमें अन्य रिश्तेदारों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होती

है। सौतेली मां हमेशा गलत ही होती है इस प्रकार का विचार और साहित्यिक चित्रण ने इस संबंध की काफी हानी की है ऐसा मालती जोशी का मानना है। उन्होने सौतेली मां-बेटे के प्रेम पूर्ण संबंधों को चित्रित किया है।

वर्तमान युग की मां अपनी पढ़ी-लिखी बेटी को पैसा कमाने की मशीन के अलावा और जादा कुछ नहीं समझती वह अपनी बेटी के भविष्य की चिंता बिल्कुल नहीं करती (कोउ न जाननहार, आखिरी सौगात, अपराजिता) ऐसी मां-बेटी का चित्रण मालती जोशी की कहानियों में हुआ है।

'बहन-बहन' के संबंधों में (आखरी शर्त) इन्होने वैचारिक भिन्नता को चित्रित किया है। 'भाई-बहन' के रिश्तें में (कोउ न जाननहार) अपने स्वार्थ के लिए बहन का इस्तेमाल करता है। तो दूसरी कहानी में हमको दियो परदेस) भाई की शादी के बाद भाई-बहन के रिश्तें में दूरियां निर्माण होती दिखाई देती है।

'सास-बहू' के रिश्तें में हमेशा संघर्ष ही दिखाई देता है, यह संघर्ष प्राचीन काल से चला आया है। प्राचीन काल में जादातर सास अपनी बहू को सताया करती थी पर वर्तमान युग में विभक्त परिवार के कारण यह संबंध कुछ अलग दिखाई देता है। आजकल की बहूएं (अंतिम संक्षेप, क्षरण, सन्नाटा ही सन्नाटा) अपनी सास पर अपना अधिकार चला रही है। बहूएं पढ़ी-लिखी शिक्षित होने के कारण उन्हें अपनी शिक्षा का घमंड़ होता है। उन्हें सिर्फ अपने पति के साथ रहना अच्छा लगता है सास-ससूर उन्हें बोझ के समान लगते हैं। सास को अपनी मजबूरी के कारण बहू के अत्याचार को सहना पड़ता है।

'ननंद-भाभी' के बीच भी (हमको दियो परदेस) स्नेहहीन संबंधों को इन्होने चित्रित किया है। इसमें भाभी अपने देवर की जिम्मेदारी मां के समान उठाती है।

'मौसी-भतीजी' संबंध में (औकात) अमीर मौसी गरीब भतीजी के साथ मानवताहीन व्यवहार करती है ऐसी स्वार्थी मौसी का चित्रण इनकी कहानी में दिखाई देता है। इस प्रकार मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन स्पष्ट होता है।

वर्तमान युग में पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन उपस्थित होता हुआ दिखाई देता है। इसी कारण पारिवारिक संबंध सीमट रहे हैं। मानव संबंधी दृष्टिकोन में भी इस युग में तेजी से परिवर्तन आता हुआ दिखाई देता है। पारस्परिक संबंधों का आधार मानवीय धरातल न होकर स्वार्थ एवं आर्थिक धरातल रह गया है। पारिवारिक संबंधों की मधुरता को व्यक्ति स्वातंत्र्य ने खत्म कर दिया है। आज का व्यक्ति आत्मकेंद्री बन अपने आप में सीमटता जा रहा है। आज पारिवारिक संबंधों में परंपरागत चली आ रही मर्यादा का अंत एवं स्वतंत्रता का प्रादुर्भाव हो चुका है। संबंधों में पहले जैसा स्थायित्व नहीं दिखाई देता। आज आपसी संबंध व्यक्तिवाद तथा भौतिकवाद के कारण शिथिल होने लगे हैं। इसके परिणाम स्वरूप परिवार का समुचित विकास नहीं हो रहा है। इसी कारण आज संयुक्त परिवारों का विघटन होता हुआ दिखाई देता है। फिर भी यह बात संतोष जनक है कि

हमारे कस्बों और देहातों में आज भी संयुक्त परिवार तथा पारिवारिक संबंधों में आत्मीयता एवं सौहार्द काफी मात्रा में शेष है। आज हमारा दायित्व बनता है कि हम समाज को पारिवारिक संगठन मजबूत करने के लिए प्रेरित करें।

पारिवारिक जीवन में कभी-कभी ऐसी स्थितियां निर्माण होती है कि परिवार के सदस्यों में एक-दूसरे के प्रति घृणा निर्माण होती है। इसीसे समस्या निर्माण होती है। इसे ही पारिवारिक समस्या का नाम दिया जाता है।

मालती जोशी ने अपनी कहानियों में ऐसी पारिवारिक समस्या को अपनी कहानी का विषय बनाया है। 'पारिवारिक विघटन की समस्या' में यह समस्या नई आई बहू (हमको दियो परदेस) के गलत बर्ताव के कारण निर्माण होती है। यह समस्या मालती जोशी की एक ही कहानी में चित्रित हुई है। 'असफल विवाह' के कारण इस प्रकार से है - अर्थाभाव (पूजा के फूल) के कारण, सफाई की अत्याधिक (तौलिए) सजगता के कारण, तीसरे के (रिश्ते) प्रवेश के कारण, स्वप्नपूर्ति के (आरंभ) अभाव के कारण, पति की (ऊब) दूरी के कारण और वैचारिक (सन्नाटा) भिन्नता के कारण, इसके बाद 'अनचाहे विवाह की समस्या' में मर्जी के खिलाफ (प्रश्नों के भंवर) शादी होने के कारण, अपने पहले प्यार को (एक शहादत एक फलसफा) न भूल पाने के कारण। 'बुढ़ापें की समस्या' में बहू के (साथी) गलत व्यवहार के कारण, बेटे और बहू के (क्षरण) अधिकार में रहने की मजबूरी के कारण, अकेले रहने की (अंतिम संक्षेप) मजबूरी के कारण, परिवार में बूढ़ों के साथ (अपने अपने दायरे) बोझ के समान बर्ताव करने के कारण, बेटों के बर्ताव के कारण (अनिकेत) मानसिक तनाव की समस्या। 'बदलतें रिश्तों की समस्या' में घरवालों की जिम्मेदारी लेने से (सन्नाटा ही सन्नाटा) इंकार करनेवाले बेटे के कारण, भाभी के (हमको दियो परदेस) आतंक के कारण, एक हादसे के कारण (आवारा बादल) मां-बेटे के बीच दरार निर्माण होती है।

'अर्थाभाव की समस्या' में अर्थ की कमी के कारण (औकात) रिश्तेदारों में अपमानास्पद बर्ताव का शिकार, अमीरी का ढोंग (उधार की हंसी) करनेवालों के कारण, अर्थ की कमी के कारण (विकल्प) लड़कियों के विवाह में रुकावटें आती है। लड़की को (बोझ) बोझ के समान मानना, अर्थाभाव के कारण (सन्नाटा ही सन्नाटा) मां को बेटे से अपमानीत होना पड़ता है। अर्थ की कमी के कारण (कोख का दर्प) बेटे की परवरिश न कर पाने के कारण बेटे को गोद देना पड़ता है।

'तलाक की समस्या' में पत्नी की कुरूपता के कारण (अक्षम्य) तलाक की समस्या, पति द्वारा तलाक पानेवाली (मान-अपमान) बहन की जिम्मेदारी की समस्या।

'अकेलेपन एवं घुटन की समस्या' में पति-पत्नी में वैचारिक (सन्नाटा) भिन्नता के कारण निर्मित अकेलेपन एवं घुटन की समस्या, मां और बेटे के बीच (आवारा बादल) गलतफहमी के कारण, मजबूरी के खातिर (कोख का दर्प) गोद दिए हुए बेटे के कारण, अपनी पढ़ाई के बाद (मोहभंग) नौकरी के लिए बेटों के जाने के कारण, आधुनिक विचारों की पत्नी की (मोहभंग) जिद के कारण अपनी दोनों बच्चियों के हॉस्टेल में होने के कारण अकेले पिता की

समस्या, ससुरालवालों के द्वारा प्रताड़ित (प्रश्नों के भंवर) बहू को अकेलेपन का शिकार होना पड़ता है। कुछ औरते ऐसी होती हैं जिन्हें (बोल री कठपुतली) अपनी इच्छा तथा अपने किसी कार्य में खुद फैसला लेने का अधिकार उनके पास नहीं होता इसलिए वह अपने ससुराल में घुटन को महसूस करती है।

'असफल प्रेम की समस्या' में अपनी प्रेमिका से शादी न कर पाने के कारण (एक शहादत एक फलसफा) जब बेटे को घरवालों की मर्जी से शादी करनी पड़ती है तो वह अपना सारा गुस्सा अपनी पत्नी पर उतारता है तब वहां असफल प्रेम की समस्या दिखाई देती है। उसके साथ एक कहानी में (रानियां) प्रेम में धोखे का शिकार लड़की का चित्रण हुआ है। इसी प्रेम में धोखे का शिकार लड़की का चित्रण हुआ है। इसी प्रेम के कारण (विदा) रिश्तें में दरार निर्माण होती है।

'बेरोजगारी की समस्या' में मालती जोशी ने इस समस्या को अपनी एक ही कहानी (एक सार्थक दिन) के द्वारा स्पष्ट किया है। किस प्रकार नौकरी की कमी के कारण लड़कों को अपमानीत जीवन व्यतीत करना पड़ता है। मालती जोशी ने आज की सच्चाई का पर्दाफाश किया है। आज की औरतें अपने आप को शिक्षित कहती है (आखिरी शर्त) पर उनमें भी परंपरागत चली आ रही रूढ़ी-परंपराओं का अनुकरण करने की मानसिकता से उत्पन्न समस्या दिखाई देती है।

'आत्महत्या की समस्या' में मालती जोशी ने एक ऐसी शिक्षित नारी का चित्रण किया है (सती) जो विधवा पर होनेवाले अन्याय तथा अत्याचारों को सुनकर तथा देखकर उसे भी विधवा का जीवन व्यतीत न करना पड़े इसलिए वह अपने पति की मृत्यु के पहले खुद आत्महत्या कर लेती है।

'अविवाहित नारी की समस्या' का अधिक चित्रण मालती जोशी की कहानियों में दिखाई देता है। परिवार में पिता की मृत्यु के बाद घर की जिम्मेदारी बड़ी बेटी पर आ जाती है वह भी खुद नौकरी कर अपने घर तथा भाई-बहनों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है। घरवालों को उसकी इस बात की कोई कीमत नहीं होती। घरवाले उससे अपना स्वार्थ निकालने के बाद उसकी तरफ ध्यान नहीं देते। मां तो अपने छोटे बेटे तथा बेटी की जितनी फिक्र करती है उतनी बड़ी बेटी की बिल्कुल नहीं करती क्योंकि उसे डर है कि वह चली गई तो घर की जिम्मेदारी कौन उठाएगा।

पति द्वारा छोड़ी या त्याग की हुई नारी को परित्यक्ता नारी कहा जाता है। मालती जोशी ने अपनी कहानियों में परित्यक्ता नारी का चित्रण करते हुए कारणों के रूप में धोखा (मोरी रंग दी चुनरियां) पत्नी की कुरूपता (अक्षम्य), पति का पूर्वप्रेम (परायी बेटी का दर्द) आदि का उल्लेख किया है।

मालती जोशी ने 'विधवा की समस्या' का चित्रण करते हुए कहा है कि विधवा की संपत्ति-जायदाद हड़पने की कोशिश (मोरी रंग दी चुनरियां) रिश्तेदार करते हैं। संपत्ति प्राप्ति के हेतु उस पर अमानवीय अत्याचार

किये जाते हैं। विधवा पर होनेवाले अत्याचारों से परिचित शिक्षित नारी भी डर जाती है। वह विधवापन की कल्पना के डर से इससे छुटकारा पाने के हेतु आत्महत्या करती है। विधवा की भयावह स्थिति से छुटकारा पाने के लिए आत्मत्याग करनेवाली नारी को चित्रित कर मालती जोशी ने संवेदनाशील पाठक के सामने प्रश्न उपस्थित कर उसे सोचने के लिए विवश किया है। विधवा को परिवारवालों की मर्जी से अपने पति के स्थान पर नौकरी कर घरवालों की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है। पति की मृत्यु के बाद (सती) एक भी रिश्तेदार उसे सहारा देने के लिए तैयार नहीं होता। कुछ परिवारों में तो सिर्फ पैसे कमाने की मशीन के रूप में (कोउ न जाननहार) विधवा का इस्तेमाल किया जाता है। उसे हमेशा ससुरालवालों के अत्याचार का (अतिक्रमण) शिकार होना पड़ता है। कुछ विधवा औरतों को (छीना हुआ सुख) उम्र भर दूसरों के सहारे जिकर विवशता का जीवन व्यतीत करना पड़ता है। इस प्रकार विधवा नारी की समस्या का चित्रण मालती जोशी की कहानियों में दिखाई देता है।

मालती जोशी ने अपनी सीमित क्षेत्र के भीतर रहकर पारिवारिक एवं नारी जीवन की बहुविध समस्याओं को सामान्य बोलचाल की एवं सहज प्रवाहमयी भाषा में व्यक्त किया है।

मालती ज़ोशी ने अपनी कहानियों में समकालीन महानगरीय जीवन की जिन अनेकानेक समस्याओं तथा उस जीवन की जिन भयावह यथार्थ स्थितियों का समकालीन कथाकारों ने उल्लेख अपनी कहानियों में किया है उन समस्याओं तथा स्थितियों का चित्रण प्रायः मालती जोशी ने अपनी कहानियों में नहीं किया है। जैसे युवा अक्रोश, छात्रों की अनुशासन हीनता, सूखा, खाद्यान्नो का अभाव, गरीबी, महंगाई विरोधी आंदोलन, हड़ताल, नौकरशाही, पूंजीवादी व्यवस्था के भयावह परिणाम, विज्ञानीकरण तथा औद्योगीकरण आदि से उत्पन्न विभिन्न नई स्थितियों को लेखिकाने अपनी कहानियों में समाहित नहीं किया है। उसी प्रकार युद्ध की विभिषिका, सांप्रदायिक्ता आदि जैसी राष्ट्रीय समस्याओं की ओर भी लेखिका का ध्यान नहीं गया है।

वस्तुतः साठोत्तरी कहानी साहित्य का क्षितिज अत्यंत व्यापक पाया जाता है। इस युग के कथाकारों ने महानगर, नगर, कस्बा तथा गांव आदि विभिन्न परिवेशों से संबंधित अपने जीवनानुभवों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। जब की मालती जोशी लिखित कहानियां नगर तथा कस्बे के जीवन चित्रण तक सिमटी हुई दृष्टिगत होती है। ग्रामांचल जीवन यथार्थ मालती जोशी के अनुभव परिवृत्त में दिखाई ही नहीं देता। मालती जोशी की कुछ कहानियों में महानगरीय जीवन की थोड़ी झलक दिखाई देती है। इनकी कहानियों में ग्राम परिवेश की किंचित-सी झांकी भी दृष्टिगोचर होती है।

साठोत्तरी युग की कथाकारों ने जिस भोगे हुए एवं अनुभव किए हुए यथार्थ की प्रामाणिक अभिव्यक्ति की है वह यथार्थ बहु आयामी है। मालती जोशी की कहानियों में भी अनुभूति के प्रामाणिकता की अभिव्यक्ति हुई है। परंतु यह अभिव्यक्ति पारिवारिक जीवन तथा उस परिवार के भीतर नारी जीवन तक ही सीमित पाई जाती

है। मालती जोशी मध्यमवर्गीय पारिवारिक परिवेश से जुड़ी रहने के कारण लेखिका का अनुभव विश्व सीमित पाया जाता है। इसी कारण लेखिका की कहानियों में चित्रित यथार्थ बहु आयामी न होकर विशिष्ठ कोनोंपर टिका हुआ पाया जाता है।

इस प्रकार अंत में कहा जा सकता है कि मालती जोशी की कहानियों में अंकित जीवन-संघर्ष के संदर्भ में एक विचारणीय मुद्दा यह भी है कि लेखिकाओं की रचनाओं में विशिष्ठ जीवन यथार्थ की प्रामाणिक अभिव्यक्ति तो मिलती है किंतु उनमें अनेक बार पुनरावृत्ति दोष भी पाया है। उनकी कहानियों में एक जैसी समस्या पात्रों के नाम तथा घटनाओं के संदर्भ बदल कर प्रस्तुत हुई हैं। उदाहरणार्थ कहा जा सकता है कि मालती जोशी की अनेकानेक कहानियों में विधवा नारी की समस्या को ही अंकित किया है। लेखिका की 'मोरी रंग दी चुनरियां' कहानी-संग्रह की प्रायः सभी कहानियां वैधव्य जीवन से संबंधित है। 'अंतिम संक्षेप' की अधिकतर कहानियां बुढ़ापे की समस्या को चित्रित करती है।